* मगध देश में फुल्लोत्पल नामक तालाब में संकट और विकट नाम के दो हंस रहते थे उनका एक मित्र कछुआ तथा बहुत सारी मछलियाँ भी वहाँ रहती, एक बार कुछ मछुआरों ने तालाब में मछलियों और कछुए को देखकर अगले दिन उन पकड़ने की बात कही। संकट और विकट ने यह बात मछलियों तथा कछुए को बता दी। कछुआ घबरा गया, उसने हंसी से अपने बचाव के लिए कहा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि 'वे एक डंडे के सिरों को अपनी - अपनी चोंच में दबा लेंगे और कछुआ लकड़ी को मुंह से बीच में पकड़ लेगा। हंसों ने उसे बोलने के लिए मना किया था। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे, तो पतंग उड़ाते हुए बच्चों ने देखा। वे उनके पीछे भागने लगे कोई कहता कि अगर कछुआ गिरेगा तो वह अपने घर ले जाएगा। कोई कुछ कहता। कछुए से रहा नहीं गया, जैसे ही गुस्से में वह बोलने लगा,

वैसे ही नीचे गिरा और मर गया। हमेशा सोच-
विचार करके कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा
हाल होगा।